अथ तत्पुरुष समास प्रकरणम्   B.A. Ist Yr.

922 - तत्पुरुषः - 2/1/22 - यह अधिकार सूत्र है। 'शेषो बहुव्रीहि' से पूर्व तक इस समास का अधिकार क्षेत्र है। सूत्र का अर्थ है यहाँ से 'कडाराः' तक के सूत्रों से होनेवाले समास तत्पुरुष के होंगे।

923 - द्विगुश्च - 2/1/23 - द्विगु समास (संख्या पूर्वो द्विगुः) भी तत्पुरुष का ही एक भेद है।

924, द्वितीया श्रितातीत पतित गतात्यस्तप्राप्तापन्नैः 2/1/24 - यह विधि सूत्र है। द्वितीया से अन्त होनेवाले पदों को श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त और आपन्न पदों के साथ विकल्प से समास होता है तथा वह तत्पुरुष संज्ञक होता है। यथा - कृष्णश्रितः - लौ० वि० - कृष्णं श्रितः। अलौ० विग्रह - कृष्ण + अम् श्रित + सु

कृष्ण पद द्वितीयान्त है अतः 'द्वितीया श्रितातीत.....' सूत्रानुसार द्वितीयान्त कृष्ण पद का 'श्रित' पद के साथ समास हुआ। 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से उसकी प्रातिपदिक संज्ञा हुई। 'सुपो धातु-प्रातिपदिकयोः' से 'अम्' और सु विभक्ति का लोप होकर कृष्ण श्रित बना। 'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से उसकी उपसर्जन संज्ञा हुई एवं उपसर्जनं पूर्वम् से पूर्वनिपात होकर पुनः प्रातिपदिक संज्ञा हुई एवं 'स्वौजसमौट्...' से 'सु' विभक्ति लगी, ससजुषो रुः से सु को रु हुआ, 'उ' का लोप होकर 'खरवसानयोः' से 'र' का विसर्ग होकर 'कृष्णश्रितः' रूप सिद्ध हुआ। लौ० वि० अ० वि०

दुःखम् अतीतः, दुःख + अम् अतीत + सु।

दुःखातीतः -

नरकपतितः - लौ० वि० नरकं पतितः, अ० वि० नरक + अम्, पतित + सु।

स्वर्गगतः - लौ० वि० स्वर्गं गतः, अ० वि० स्वर्ग + अम्, गत + सु।

तडागात्यस्तः (तालाब में फेंका हुआ) लौ० वि० - तडागम् अत्यस्तः, तडाग + अम्, अत्यस्त + सु (अ० वि०)

मोक्षप्राप्तः - अ० वि० मोक्ष + अम्, प्राप्त + सु, लौ० वि० - मोक्षं प्राप्तः।

शोकापन्नः - लौ० वि० - शोकम् आपन्नः, अ० वि० - शोक + अम्, आपन्न + सु। All are same as कृष्णश्रितः।

925 - तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन - 2/1/30

यह विधि सूत्र है। सूत्र का अर्थ है - तृतीयान्त पद का उसके द्वारा किए गए गुणवाचक शब्द एवं 'अर्थ' पद के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है। यथा - शङ्कुलाखण्डः - अलौ० वि० शङ्कुला + टा, खण्ड + सु, लौ० विग्रह - शङ्कुलया खण्डः। सूत्रानुसार 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' तृतीयान्त शङ्कुलया पद का खण्डः पद के साथ समास हुआ। 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से उसकी प्रातिपदिक संज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से विभक्ति का लोप होकर - शङ्कुला खण्ड बना। 'प्रथमानिर्दिष्टं उपसर्जनम्' से उपसर्जन संज्ञा, 'उपसर्जनं पूर्वम्' से पूर्वनिपात, पुनः प्रातिपदिक संज्ञा, स्वादि कार्य होकर शङ्कुलाखण्डः रूप सिद्ध हुआ।

(b) धान्यार्थः - लौ० वि० - धान्येन अर्थः, अ० वि० - धान्य + टा + अर्थ + सु। Same as शङ्कुलाखण्डः।

Scanned with CamScanner